Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 12, Issue September 2021 | Impact Factor 4.765

भारत की आध्यात्मिक परम्परा में गुरमति संगीत

परमजीत कौर
सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी

सारांश

भारत उपमहाद्वीप में उत्पन्न प्राचीन धर्मों में हिन्दु, बुद्ध तथा जैन प्रमुख है। मध्यकाल में विभिन्न कुरीतियों के विरोध में भक्ति आन्दोलन की जो लहर चली, एक निश्चित व्यवहारिक संहिता के अभाव में, पंजाब को छोड़ इसका आध्यात्मिक पक्ष इतना प्रबल न हो सका। भारत के पंजाब अंचल में यह सिक्ख धर्म के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

भारत में उत्पन्न सभी धर्मों ने संगीत को सम्पर्क तथा अपनी धार्मिक विचारधारा को प्रचारित एंव प्रसारित हेतु उपयोग में लिया। प्राचीनतम हिन्दु ग्रंथों में सामवेद पूर्णतया संगीत को समर्पित है। रामायण, महाभारत, धर्मसूत्र, उपनिषद, इत्यादि में भी संगीत का उल्लेख मिलता है। बौद्ध तथा जैन धर्म के मनीषियों ने भी अपनी आध्यात्मिक विचारधारा को लोगों तक पहुँचाने में संगीत का प्रचुर उपयोग किया। 'गुरुग्रन्थ साहिब' सिक्ख धर्म का पूजनीय ग्रन्थ है। इसका सम्पादान रागात्मक है। 1430 पृष्ठों के महाकाय ग्रन्थ को तरन्नम में पढ़कर तथा लय में गाकर ईश्वर के रहस्यों को जाना जा सकता है। गुरुग्रन्थ साहिब में बाणी का उपादान गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु अरजन तथा गुरु तेगबहादुर ने किया। इनके अतिरिक्त गुरु रविदास, कबीर, बाबा फरीद, जयदेव, रामानन्द तथा सूरदास जैसे भक्तों–सन्तों एंव भट्टों की बाणी को भी इस ग्रन्थ में शामिल किया गया है।

उपनिषदों में जिस गुरु–शिष्य परम्परा का निर्वाह वैदिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए किया जाता था वैसी ही परम्परा सिक्ख मत में 15वीं शताब्दी में स्थापित हुई। इस नवीन उपनिषद को ही गुरमति कहा जा सकता है। इसका उद्देश्य जन–मानस को आध्यात्मिक ज्ञान से पल्लवित करना है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के इस सन्देश को जन साधारण में लोकप्रिय बनाने के लिए संगीत का प्रयोग साधन तथा साध्य दोनों रुपों में किया गया है। यही सात्विक संगीत गुरमति संगीत है।

गुरु नानक स्वयं को डाढी कहा करते थे–

''हउ डाढी बेकार कारि लाइया।

रात दिने करि वार धुरो फुरमाइया।'' (आदि ग्रन्थ, 15)

डाढी का अर्थ गायक है। शब्द गायन करते समय मरदाना रबाब पर गुरु जी की संगत किया करता था। जिस प्रकार तानसेन के वंशज आधुनिक काल में अपने को गौरवान्वित अनुभव करते है ठीक वैसे ही आज–मरदाने के वंशज भारत व पाकिस्तान में गुरु घर के कीर्तनियों के रुप में विख्यात है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का सांगीतिक परिचय

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब गुरमति संगीत का प्रमाणिक एंव आधार ग्रन्थ है। यदि हम निम्नलिखित शब्द रचना को देखें जो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ 611 पर अंकित है तब हमें राग का महत्व व अन्य सांगीतिक तत्वों का पता चलता है।

सोरठि महला 5 घरु 2 चऊपदे

''एक पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई।।

सुणि मीता जीऊ हमारा बलि बलि जासी हरि दरसनु देहु दिखाई।।1।।

सुणि मीता धूरी कऊ बलि जाई।।

इहु मन तेरा भाई।। रहाऊ।।

सर्वप्रथम ''राग सोरठि'' शीर्षक रुप में दिया है, फिर रचनाकार 'महला 5' के रुप में अर्थात् इस शब्द की रचना पाँचवे गुरु अरजन देव जी ने की है। 'घरु' भी एक सांगीतिक संकेत है जिसे ताल के रुप में माना जा सकता है। शब्द रचना में अंक 1 तथा रहाऊ गुरमति संगीत के ऐसे संकेत है जो गायन रचना के अन्तरा एवं स्थाई के सूचक है। ये सभी संकेत गायक का मार्गदर्शन करते है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में 31 मुख्य राग तथा 31 राग प्रकार अर्थात् मिश्रित राग है। राग वडहंस तथा राग गऊड़ी के 11 प्रकार गुरमति संगीत की विशेषता है। गुरुकाल में प्रचलित विभिन्न लोक शैलियाँ तथा लोकधुनों का विवरण श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में उपलब्ध है। गायन शैलियों में प्रबन्ध, ध्रुपद, धमार व ख्याल के अतिरिक्त उस समय पड़ताल भी शिखर पर थी। पड़ताल गायन गुरमति संगीत की एक अनोखी विधा है जिसका प्रचलन आज कम हो गया है। ''पड़ताल से तात्पर्य है ऐसी गायन शैली जिसमें ताल बार–बार परतता रहे, बदलता रहे।'' (सिंह, प्रो. साहिब–325) पड़ताल गायन के अन्तर्गत शब्द गायन के लिए ''प्रत्येक अन्तरे के लिए पाँच तालों का प्रयोग किया जाता है परन्तु स्थाई के लिए एक ही ताल रहता है। प्रत्येक ताल में तिहाई लगाने के लिए पड़ताल की काव्य रचना में विशेष ताल–तुकांत विद्यमान रहता है।'' (सिंह, डा. गुरनाम –21)

वाद्यों में रबाब, ताऊस, इसराज, सारंदा इत्यादि वाद्यों का प्रयोग होता है। रबाब का प्रचलन पुनः बढ़ रहा है। हारमोनियम कीर्तनकारों का मुख्य संगत वाद्य रहता है। डाढी जो खड़े होकर धार्मिक वार गायन करते हैं संगत में सारंगी तथा डढ का प्रयोग करते हैं। ताल वाद्यों में पंजाब का तबला भारत के अन्य क्षेत्रों से भिन्न हुआ करता था। इस तबले के दोनों अवयवों की बनावट ओखलीनुमा थी। दाहिने के समान बायां भी काष्ठ का होता था। इस काष्ठ की जोड़ी में बायां–'धम्मा' को गम्भीर आवाज के कारण नर तथा दायां–'मदीन' को पतली आवाज के कारण नारी की संज्ञा दी गई। इस प्रकार के तबलों पर पखावज का खुला बाज बजाया जाता था जिसकी

PURVA MIMAANSA

स्पष्ट झलक पंजाबी अंग में ही दिखाई देती है। आजकल तबले में 'धम्मा' का प्रयोग कम होने से पंजाब अंग समाप्त होता जा रहा है। एक विद्वान के अनुसार, ''इससे कीर्तन में गम्भीरता समाप्त हो गई है।'' (पेन्टल, 8) तालों में ''पऊड़ी ताल पंजाब की प्रसिद्ध लोक गायन विधा 'वार' के साथ बजाई जाती है।'' (पेन्टल, 229) तथा गुरमति संगीत में सुबह के कीर्तन ''आसा दी वार'' के साथ बजाई जाती है। शेष सभी ताल कीर्तन में प्रयोग होते हैं।

कीर्तन चौंकी परम्परा – श्री हरिमन्दिरर साहिब, अमृतसर तथा अन्य ऐतिहासिक गुरुद्वारों में कीर्तनकार गुरमति संगीत के नियमानुसार प्रमाणिक बाणी का कीर्तन करते हैं, उसे कीर्तन चौंकी कहते हैं। चौंकी चार गाने वाले रागियों की मण्डली से अस्तित्व में आया होगा। गुरबाणी में कीर्तन करने वाले चार व्यक्तियों में एक जत्थे का मुखिया, दो सहायक जो दिलरुबा, सारंदा या ताऊस आदि तंतु वाद्यों के साथ कीर्तन करते थे तथा चौथा तबले की संगत करता था। आजकल अधिकतर तीन व्यक्तियों के जत्थे में दो हारमोनियम पर तथा एक तबले पर दिखाई देते हैं। यदा–कदा आज भी कुछ रागी जत्थे अपने कीर्तन में तंतु वाद्य की संगत के लिए चौथे व्यक्ति को शामिल कर लेते हैं।

श्री हरिमन्दिर साहिब में पहली चौंकी 'तीन पहर की चौंकी' सुबह 2:45 पर प्रारम्भ होती है। इसके पश्चात आसा दी वार, बिलावल की चौंकी, आनन्द की चौंकी, चरणकंवल की चौंकी, सोदर की चौंकी, आरती तत्पश्चात् कल्याण की चौंकी तथा अन्त में कीर्तन सोहिले की चौंकी देर रात समाप्त होती है।

ऋतुओं सम्बन्धित कीर्तन चौकियों में बसन्त ऋतु में राग बसन्त का गायन श्री हरिमन्दिर साहिब की प्रत्येक दैनिक चौंकी में किया जाता है। इसी प्रकार मल्हार राग सावन के पूरे माह में गाया जाता है।

गुरमति संगीत न केवल गुरुद्वारों में कीर्तन के लिए है अपितु सामाजिक जीवन के हर मोड़, जन्म, विवाह, मृत्यु इत्यादि पर भी अग्रणीय है। सिक्ख धर्म की इस खूबी से प्रभावित होकर एक विद्वान ने लिखा है–

> "Sikhism is perhaps the only religion that was music as ritual, liturgy, prayer and insights. Hinduism is cautious and defensive on the subject of music and uses it sparingly in religious observance. There is, of course the Bhajan. But Bhajan is not part of the essential ritual; most of minutiae of the religion care of Hinduism are, in fact, based on tantric mudras (gestures) drawn from a subtly concealed and deeply hidden, esoteric inheritance, Sikhism, on the other hand, believes in subtly subverting the inner resistance of the human being, transform and regenerate him and trap him into an awareness of his inner essence. Indeed, Gurmat Sangeet is among Sikhism's essential tool of transformation." (Menon, 29)

गुरमति संगीत अपनी विशेषताओं के साथ निरन्तर प्रफुलित हो रहा है। निःसन्देह गुरमति संगीत का शस्त्रीय पक्ष निर्बल हुआ है परन्तु पंजाबी विश्वविद्यालय तथा गुरु नानक विश्वविद्यालय के प्रचार प्रसार से इसकी पुरानी आभा लौट रही है। इंटरनेट तथा इलैक्ट्रोनिक माध्यमों से गुरमति

PURVA MIMAANSA

संगीत का प्रसार देश में ही नहीं विदेशों में भी हो रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

आदि ग्रन्थ, पृष्ठ–15

सिंह, प्रो. साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब दर्पण, पोथी तीसरी, पृष्ठ–325

सिंह, डा. गुरनाम आदि ग्रन्थ– राग कोष, पृष्ठ–21

पेन्टल, डा. अजीत सिंह गुरमति संगीत विभिन्न परिपेख, पृष्ठ–8

पेन्टल, डा. गीता पंजाब की संगीत परम्परा, पृष्ठ–229

Menon, Raghav R. अमृत कीर्तन, संगीत पत्रिका, मार्च 2000, पृष्ठ–29

PURVA MIMAANSA